IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन

शोध निर्देशक
प्रो० शैलजा गुप्ता
विभागाध्यक्ष
शिक्षक शिक्षा विभाग
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई
जिला-जालौन (उ०प्र०)

शोधार्थी
अनिल कुमार
(शिक्षाशास्त्र)

प्रस्तावना-

शिक्षा का अर्थ केवल साक्षर होना नही है। बल्कि शिक्षा का वास्तविक अर्थ है बालक को प्रशिक्षण देना है शिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध किया जाना चाहिये आज के समय शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य छात्रों को मात्र परीक्षा पास कराना है जिससे छात्रों का विकास नही हो पाता है किसी भी राष्ट्र व समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है, मानव द्वारा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर विकास का मार्ग प्रशस्त किया जाता है शिक्षा के द्वारा मानव को सही ज्ञान प्रदान किया जाता है कि संसाधनों का उपयोग किस प्रकार, समय पर करना है और कोन सा संसाधन किस कार्य के लिये उपयोगी है एक शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार, समाज और देश को गौरांवित करता है।

उत्तर प्रदेश राज्य में विभिन्न प्रकार की जातियाँ निवास करती है। उन्हीं में से एक है सहरिया यह जनजाति आदिवासी की श्रेणी में आती है और अनुसूचित जाति का दर्जा प्राप्त है। सहरिया कोलरियन परिवार की जनजाति है। फारसी भाषा में सहर का अर्थ है जंगल। चूंकि यह लोग जंगलों में निवस करते हैं इसलिए इन्हें सहरिया जनजाति कहा जाता है। सहरिया पुरुष धोती, रंगीन कमीज और साफा पहनते हैं जबकि महिलाएं लहँगा, घाघरा, सलूका पहनते हैं। सहरिया जनजाति के लोग शारीरिक स्वच्छता पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं। सहरिया जनजाति समतल मैदान में समूह में रहते हैं। इसकी बसाहट एक विशेष प्रकार की होती है, जिसे सहराना कहा जाता है। सहारिया जनजाति में पारिवारिक इकाई कुटुम्ब कहलाती है। सहरिया जनजाति की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, मजदूरी, वन उपज, संग्रह है। यह लोग जड़ी बूटी की पहचान करने में निपुण होते हैं। सहरिया जनजाति का धर्म में अटूट विश्वास होता है। इनमें हिन्दू देवी-देवताओं की

पूजा व्यापक रूप से की जाती है। सहरिया जनजाति के लोग हिन्दू पर्व, होली, दीपावली, दशहरा प्रमुख रूप से मनाते हैं। यह जनजाति जादू-टोना, भूतप्रेत आत्मा में विश्वास करती है। सहरियाओं की अपनी कला और संस्कृति के लिए विशिष्ट पहचान है। इनमें गीत कथाएँ पहेलियाँ और कहावते लोक संस्कृति की परिचायक है। इस जनजाति में कम मात्रा में बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं क्योंकि इस जाति में लोग कम पढ़े लिखे होते हैं और इस जाति का निवास निश्चित नही होता है। यह खानबदोश की तरह अपना जीवन व्यतीत करते है। इसी कारण इनके बच्चों को नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाती है। सरकार लगातार प्रयास कर रही है और अनेक छात्रावास उपलब्ध करा रही है कि सहरिया जनजातीय छात्र इनमें रहकर शिक्षा प्राप्त कर सके और अपना, समाज का विकास कर सके और विकास की मुख्य धारा में शामिल हो सके। सरकार ने सहरिया जनजाति के लिए आदिम जाति कल्याण विभाग की स्थापना की है जिसका मुख्य उद्देश्य आदिवासी जनजाति लोगों की शिक्षा सुरक्षा रोजगार सामाजिक विकास की दिशा में कार्य करना है।

समस्या की उत्पत्ति-

किसी भी समाज राज्य देश की प्रगति का आधार शिक्षा होती है और सरकार का प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक बालक/बालिका को शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षा को अधिकार अधिनियम 2010 के अनुसार प्रत्येक छात्र/छात्रा अनिवार्य निशुल्क शिक्षा और मिड-डे-मील, डे्रस, शिक्षण सामग्री और अन्य चीजें उपलब्ध कराना है। यदि छात्र को शिक्षा की आवश्यक चीजें प्राप्त नहीं होती है तो वह शिक्षा से दूर हो जाता है।

व्यक्ति और समाज देश को विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के द्वारा बालकों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में चेतना जागरूकता आती है। शिक्षा ही एकमात्र साधन है जिसके द्वारा सभी छात्र/छात्राओं को नवीन ज्ञान से जोड़कर सफल बनाया जा सकता है। अध्यापक का कर्तव्य है कि वह अपने सभी छात्रों को समानान्तर से शिक्षित करे और सही मार्गदर्शन देकर उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाये। हमारे देश को स्वतन्त्र हुए 75 साल हो गये है और भारत सरकार द्वारा प्रत्येक नागरिकों को शिक्षा प्रदान करने के लिए अनेक आयोग समीतियों का गठन किया गया है और सरकार अनेक योजनायें शिक्षा में विकास के लिए निरंतर चला रही है परन्तु क्या कारण है कि आज के समय में भी सहरिया जनजाति के लोग कम मात्रा में शिक्षित है। सहरिया जनजाति सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े है और जीवन स्तर में प्राचीन परम्पराओं आदिम प्रवृति विद्यमान है। शैक्षिक स्वास्थ्य, आवास का पूर्णतः अभाव है। इस जनजाति के लोग खानाबदोश जीवन व्यतीत करते हैं। सहरिया जनजाति में अपनी निजी बोली संस्कृति इतिहास का अभाव है। ये जनजाति प्रायः अपने समुदाय को निम्न जाति का मानकर दूसरे समुदाय से अलग रहना पसंद करते हैं। सहरिया जनजाति के लोगों का मुख्य भोजन ज्वार, मक्का, गेहूँ, बाजरा है। यह जनजाति महुआ को उबालकर खाने के शौकीन होते हैं। यह जनजाति मांस, मछली, मुर्गी, अण्डा या शिकार किये जानवर का मांस भी खाते हैं। धूम्रपान के लिए बीड़ी का प्रयोग करते हैं। प्राकृतिक रूप से प्राप्त कंदमूल फल हरी पत्ती खाने का सहरिया जनजाति का सबसे प्रिय शौक है। वनस्पति का ज्ञान प्रत्येक सहरिया को विरासत में मिला है। सहरिया जनजाति के लोगों का जीवन अत्यन्त साधारण है और भौतिक साधनों का आभाव है। सन्तुलित भोजन की कमी और शारीरिक स्वच्छता के अभाव के कारण विभिन्न बीमारियों व रोगों से ग्रस्त रहते हैं। अन्ध विश्वास और जादू-टोना के कारण डॉक्टरी चिकित्सा (इलाज) के अभाव में अकाल मृत्यु भी हो जाती है। वह विकास की मुख्य धारा में शामिल नहीं हो पा रहे है। उन्हें रहने के लिए मकान रोजगार शिक्षा के साधन प्राप्त नहीं हो रहे है। सरकार सरकारी नौकरी में

शिक्षा से आरक्षण प्रदान कर रही है फिर भी सहरिया जनजाति के लोगों का विकास तेजी से नहीं हो पा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व –

आज देश को आजाद हुए 75 साल हो गये है। भारत सरकार ने प्रत्येक नागरिक को शिक्षित रोजगार पदक बनाने के लिए अनेक आर्थिक समितियाँ बनायी है जिससे शिक्षा जनजन तक पहुँच रही है। प्रत्येक वर्ग लाभ प्राप्त कर रहा है और देश वर्तमान प्राप्त कर रहा है। परन्तु आज की सहरिया जनजाति के लोग शिक्षा के प्रति, रोजगार के प्रति जागरूक नहीं है। यही कारण है कि इस जनजाति का विकास नहीं हो पा रहा है। सहरिया जनजाति के लोगों तक शिक्षा स्वास्थ्य सेवाओं का पहुँचाना आज भी एक कठिन चुनौती है, क्योंकि सहरिया जनजाति एक आदिम जनजाति है। कुपोषण आज भी बेहद गम्भीर चुनौती है और सहारिया जनजाति इससे ग्रस्त हाल के वर्षों में सरकार ने गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर सहरिया जनजाति बहुल्य गांवों में शिक्षा कुपोषण निदान और स्वास्थ्य सम्बन्धी मसलों पर बेहतर कार्य करने का प्रयास किया है और यह प्रयास वर्तमान समय में भी निरन्तर जारी है। इसलिए शोधार्थी ने सहरिया जनजाति को शिक्षित करने व्यावसायिक (रोजगार) के प्रति जागरूकत करने और समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाये जिससे सहरिया समाज सफल होगा।

सम्बन्धित शोध साहित्य का सर्वेक्षण –

समस्या चयन के बाद मनोवैज्ञानिक अनुसंधान कर्ता समस्या के गहन अध्ययन के लिये सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करता है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वक्षण में वह समस्या से सम्बन्धित शोध कार्य पुस्तके विभिन्न प्रकार के शोध पत्र, पत्रिकाएंे का अध्ययन करके अपनी शोध समस्या के सम्बन्ध में जानकारी एकत्र करता है सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के अनेक स्त्रोत है जिसमें समस्या से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है।

जैसे –

शोध पुस्तिके, शोध पत्र पत्रिकाऐं, मनोवैज्ञानिक रिव्यू, संदर्भ पुस्तकें, प्रकाशित प्रबन्ध, लघु पुस्तिकाएंे, कम्प्यूटर सामग्री, इन्टरनेट, समाचार पत्र आदि उक्त विश्लेषण के आधार पर यह जानना आवश्यक है।

1. **सिंह प्रमिला (2017)** - प्रस्तुत शोध कार्य में रीवा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की बुद्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया और पाया कि छात्र-छात्राओं की बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। शहरी संस्कृति, रहन-सहन, आदिवासी क्षेत्र, सुरक्षा के प्रति अभिवृत्ति और जागरूकता में अन्तर पाया गया है।

2. **राकेश कुमार (2018)** - प्रस्तुत शोध कार्य में ग्वालियर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च बुद्धि वाले एवं निम्न बुद्धि वाले विद्यार्थियों का अध्ययन किया गया और पाया कि उच्च बुद्धि एवं निम्न बुद्धि वाले विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. **गोस्वामी सरिता (2021)**- प्रस्तुत शोध में मेरठ जिले के 100 विद्यार्थियों की बुद्धि पर शोध कार्य किया गया और पाया कि माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. **यादव, जे.एस.** (1996)- इन्होंने मुरैना क्षेत्र के सहरिया जनजाति के छात्र-छात्राओं की विभिन्न रूचियों का अध्ययन किया और पाया कि-

- मानविकी विज्ञान, कला, कृषि क्षेत्र में सार्थक अन्तर नहीं है।
- गृहविज्ञान, फाइन आर्ट में अन्तर पाया गया।
- छात्राओं की कृषि, घरेलू कार्य में अधिक रूचि थी।

5. **डॉ0 सिंह, प्रमिला** (2017)- प्रस्तुत शोध कार्य में रीवा जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शहरी, ग्रामीण विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया और पाया कि-

- छात्र-छात्राओं की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी संस्कृति, पृष्ठभूमि, आदिवासी बहुल्य क्षेत्र रहन-सहन शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति व जागरूकता में अन्तर का परिणाम है।

6. **राकेश, कुमार रमेश** (2018)- प्रस्तुत शोध कार्य में ग्वालियर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च बुद्धि वाले एवं निम्न बुद्धि वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन किया गया और पाया कि-

- उच्च बुद्धि एवं निम्न बुद्धि के विद्यार्थियां के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं है।

7. **देवी, कुसुम** (2021)- वर्तमान शोध अध्ययन मुरैना जिले के स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं के बीच शैक्षणिक चिन्ता की जांच करने के लिए किया गया और पाया कि-

- महिला एवं पुरूष स्नातक छात्रों के बीच शैक्षणिक चिन्ता में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।
- पुरूष एवं महिला स्नातक छात्रों में भावात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।
- पुरूष स्नातक छात्रों के बीच भावात्मक, शैक्षणिक चिन्ता के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।
- महिला स्नातक छात्राओं के बीच भावात्मक, शैक्षणिक चिन्ता में महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

समस्या कथन -

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन।

शोध समस्या में प्रयुक्त शब्दों का क्रियात्मक परिभाषीकरण -

1. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी
2. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि
3. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि

1. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

सहरिया जनजाति उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में पायी जाती है। सहरिया शब्द पारसी शब्द जिसका अर्थ है जंगल। इस जाति के लोग जंगल इलाके में रहते हैं। सहरिया जनजाति का क्षेत्र समस्त उत्तर प्रदेश में फैला है। यह जनजाति शिकार, संचयन से अपनी जीविका चलाते हैं परन्तु अधिकांश सहरिया जनजाति मजदूरी, लोहापीट और अन्य कार्यों के द्वारा जीवनयापन करते हैं। इस जनजाति में लोग मांस, मदिरा, मादक पदार्थ आदि का सेवन करते हैं। सहरिया जनजाति को उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया है। इस जनजाति में कम मात्रा में छात्र-छात्रायें शिक्षा प्राप्त करते है और सरकार इस जनजाति के शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए अनेक योजनाएं चला रही है जिससे यह जनजाति विकास करके समाज की मुख्य धारा से जुड़ सके और अपने समाज का विकास कर सके। सहरिया जनजाति के मेधावी छात्रों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए सरकार अनेक प्रकार की योजनाएं छात्रवृत्तियाँ सरकारी सहायता प्रदान कर रही है।

2. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि

बुद्धि शब्द का सामान्य बोलचाल भाषा में बहुत ही अधिक उपयोग होता है। बुद्धि का क्षेत्र बड़ा व्यापक होता है।

बुद्धि का अर्थ- मनुष्य का मस्तिष्क अनेक योग्यताओं में भिन्नता ही यह शक्तियाँ विभिन्न प्रकोष्ठ में निहित है। इसी प्रकार बुद्धि के लिए एक कोष्ठ निर्धारित है।

बुद्धि एक सामान्य व्यक्ति की क्षमता है जिसके द्वारा वह चेतनापूर्वक अपने विचारों के नवीन आवश्यकताओं से समायोजित करता है। नई समस्याओं तथा जीवन की परिस्थितियों के प्रति समाज मानसिक अनुशीलता है। बुद्धि वह मानसिक शक्ति है जो वस्तुओं, तथ्यों को समझने में आपसी सम्बन्ध खोजने तथा तर्कपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है। जीवन की परिस्थिति एवं समस्याओं की श्रृखंला में समायोजन करना आवश्यक है। समायोजन वस्तु की प्रकृति पर निर्भर करता है। प्रत्येक उद्देश्य के लिए उचित साधनों का होना आवश्यक है। उद्देश्य प्राप्ति की सफलता का मापन बुद्धि का मापन कहा जा सकता है। बुद्धि एक योग्यता है जो विभिन्न लोगों में अलग-अलग पायी जाती है।

बुद्धि की विशेषतायें

1. बुद्धि जन्मजात तथा अर्जित दोनों प्रकार के कारकों को प्रभावित करती है।
2. बुद्धि व्यक्ति की समस्त समस्याओं का समाधान करने में सहायता करती है।
3. बुद्धि के द्वारा व्यक्ति नई परिस्थिति में समायोजन करता है।
4. मनुष्य की बुद्धि का विकास शिक्षा, अनुभव और अभ्यास से होता है।

बुद्धि के प्रकार

1. **सामान्य बुद्धि**- सामान्य बुद्धि व्यक्ति की मानसिक क्षमता को दर्शाती है।
2. **विशिष्ट बुद्धि**- यह किसी विशेष कार्य, क्षेत्र, क्षमता को व्यक्त करती है जैसे- संगीत, कला, खेल।
3. **सामाजिक बुद्धि**- मनुष्य में दूसरों के साथ उचित व्यवहार और परिस्थिति को समझने की क्षमता प्रदान करती है।

बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

1. परिवार का वातावरण
2. शिक्षा
3. पोषण एवं स्वास्थ्य
4. सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण
5. प्रेरणा तथा अभ्यास

शिक्षा में बुद्धि का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में बुद्धि का अत्यधिक महत्व है। बुद्धि के द्वारा छात्र अपने शैक्षिक जीवन में सफलता प्राप्त करता है और बुद्धि के अनुसार अपनी योजना बनाता है। छात्र नई अवधारणा को शीघ्र समझ लेता है। बुद्धि के आधार पर बालक प्रत्येक परिस्थिति में समायोजन कर सकता है। बुद्धि मानव जीवन की अमूल्य सम्पत्ति है। यह केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने का साधन मात्र नहीं है। आज के समय बुद्धि का विकास प्रत्येक बालक के लिए आवश्यक है। इसलिए विद्यालय एवं समाज का दायित्व है कि वे अच्छा वातावरण छात्रों को उपलब्ध कराये। जिससे प्रत्येक छात्र बौद्धिक क्षमता का विकास कर सके और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सके।

अध्ययन के उद्देश्य -

1. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय छात्र एवं छात्राआं की बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना-

1. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन के चर -

1. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्याथी।
2. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की बुद्धि।
3. उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचियाँ।

अध्ययन के उपकरण –

1. सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की बुद्धि मापन हेतु उपकरण: R.K. Tandon, Group Test of Intelligence.

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य में ऑकडों की प्रकृति के आधार पर टी-टेस्ट विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य में उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के सहरिया जनजातीय माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों को शामिल किया जायेगा। शोध कार्य में 300 छात्र और 300 छात्रायें न्यादर्श के रूप में शामिल किये जायेगें।

प्रदत्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

Gender	N	Mean	Sd	P.Value	Significant Label 0.05	T. Value	df	Result
Boys	300	58.85%	12.13	0.003	1.96	7.35	598	Null Reject
Girls	300	51.42%	12.59					

व्याख्या –

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहारिया जनजाति के माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करके स्वतंत्र सैम्पल टेस्ट, टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया। विश्लेषण के परिणाम अत्यन्त स्पष्ट और सार्थक पाये गये। छात्रों का ग्रुप ए का औसत बुद्धि स्कोर 58.85 तथा छात्राओं ग्रुप डी का औसत बुद्धि स्कोर 51.42 प्राप्त हुआ जो दर्शाता है कि छात्रों का औसत स्कोर छात्राओं से 7.43 अंक अधिक है। दोनों समूहों के बीच प्राप्त टी मान 7.356 तथा पी मान 0.003 स्वीकृत सार्थकता स्तर 0.05 से काफी कम है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया जाता है और वैकल्पिक परिकल्पना ;भ्1द्ध को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष –

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सहारिया जनजाति के माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि का स्तर छात्राओं की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप में उच्च पाया गया है। यह अन्तर केवल संयोग या नमूना त्रुटि के कारण नहीं है बल्कि दोनों समूहों के बीच वास्तविक और महत्वपूर्ण अन्तर को दर्शाता है। इस परिणाम से यह संकेत मिलता है कि सहारिया जनजाति के छात्र और छात्राओं के बुद्धि विकास में लैंगिक आधार पर असमानता मौजूद है जिसके पीछे सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक या पर्यावरण कारक भी जिम्मेदार हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. **भारद्वाज, एस.बी.एल. (1984)-** आकूपेशनल इन्टेªस्ट पैटर्न ऑफ प्रासपेक्टिव टीचर ऑफ हायर सेकेण्डरी स्कूल इन उ.प्र., पी–एच.डी. साइकोलॉजी लखनऊ यूनिवर्सिटी।

2. **सिंह, एल. श्री सिंह (1988)-** पैटर्न ऑफ एजूकेशन एण्ड वोकेशनल इन्टेªस्ट ऑफ एडालसेंटस पी–एच.डी. साइकोलॉजी आगरा यूनिवर्सिटी।

3. **रेड्डी, आर.के. (1993)-** डेवलपमेंट ऑफ वोकेशनल एमंग एडालसेंस रूरल एण्ड अरवन स्टूडेंटस, पी–एच.डी. एजूकेशन, आसाम यूनिवर्सिटी।

4. **भट्नागर, एच. (1997)-** ए स्टडी ऑफ आकूपेशनल च्वाइस ऑफ एडालसेंस गर्ल्स फीटर्स इन्स्युलिंग, पी–एच.डी. एजूकेशन, मेरठ यूनिवर्सिटी।

5. **जावेद, अब्दुल कुरैशी (1999)-** ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द वोकेशनल इन्टेªस्ट ऑफ द स्टूडेंट ऑफ द डेल्टा स्टेज एण्ड इट्स इम्पलीकेशन फॉर द फ्यूचर करीकुला, पी–एच.डी. एजूकेशन, लखनऊ यूनिवर्सिटी।

6. **राकेश, सिंह (1998)-** ए स्टडी ऑफ एजूकेशनल व्वाइसेज एण्ड वोकेशनल प्रिजरेन्सेज ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू इनवायरमेंट प्रोसेस वैरिएबल पी–एच.डी. एजूकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।

7. **शर्मा, एस. (1994)-** फैमिली एण्ड पी.गु्रप इन्फ्लूयेन्स ऑमाद वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ऑफ गिफ्टेड एडालसेन्स स्टडिंग इन डिफरेंस टाइम्स ऑफ स्कूल, पी–एच.डी. एजूकेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।

8. **यादव, जे.एस. (1996)-** अजमेर जिले के कक्षा 10 के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचियों तथा अन्य क्रियाओं के सन्दर्भ में अध्ययन।

9. **अन्य स्रोत– www.google.com**